परमेश्वर का मूल उद्देश्य

मत्ती 22:37–39

कैटी बेस द्वारा द्वारा तैयार नोट्स

1. परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध

2. स्वयं के साथ सही सम्बन्ध

3. दूसरों के साथ सही सम्बन्ध

    क. पति
    ख. बच्चे
    ग. माता–पिता और सास ससुर
    घ. मित्र व अन्य

4. घर में सही व्यवस्था

    क. अर्थप्रबन्धन
    ख. समय प्रबन्धन
    ग. गृह व्यवस्था
    घ. प्राथमिकताएं
    ङ. रवैया तथा महौल
    च. यौन
    छ. स्वास्थ्य/पोषण

1. परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध

- क) आरम्भ में परमेश्वर का उद्देश्य
- ख) क्या हुआ ?
- ग) परमेश्वर पुनःस्थापित करता है

मत्ती 22:37–39

पहला परमेश्वर से प्रेम
दूसरा स्वयं से प्रेम
तीसरा अपने पड़ोसी से प्रेम

क) आरम्भ में परमेश्वर का उद्देश्य

i) कि मनुष्य के साथ संगति करे, परमेश्वर को परिवार की इच्छा।
1 यूहन्ना 1:3 उत्पत्ति 2:19, 3:8

ii) कि मनुष्य के साथ प्रतिदिन सम्बन्ध रखे।
परमेश्वर के साथ चले, उससे बात–चीत करे, उसे जाने
उसके साथ पूरी तरह से खुल कर रहे, अनन्त काल तक उसके साथ रहे
उत्पत्ति 5:22,24 – हनोक ; 6:9 – नूह ; निर्गमन 33:9 – मूसा

iii) कि आदमी को अकेला नहीं रहना था ; औरत को अपने पति के साथ पूर्ण साथी होना था।

- ★ आत्मा, प्राण और देह में : एक हो जाने के लिए
- ★ एक दूसरे के साथ पूरी तरह से खुल कर रहते थे, नग्न , कुछ छिपाने के लिए नहीं

- ★ हव्वा ने आदम को पूर्ण किया उत्पत्ति 2:18 – 25
- ★ परमेश्वर हमारे वर्त्तमान तथा विवाह को ठीक करता है।

iv) कि मनुष्य को जीवन का आनन्द, अपने पर्यावरण तथा एक दूसरे को बनाना था।
उत्पत्ति 2:18 – 25, 1:28–31

v) हम जाने कि हम परमेश्वर की सृष्टि के रुप में कहां हैं तथा वह होने में परिपूर्ण हों।
उत्पत्ति 1:26–28

परमेश्वर का मनुष्य से पहला प्रश्न "तू कहां है ?" उत्पत्ति 3:9
परमेश्वर का मनुष्य से दूसरा प्रश्न "तेरा भाई कहां है " उत्पत्ति 4:9

ख. स्त्री और पुरुष के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्य का क्या हुआ?

आज्ञा – उत्पत्ति 2:17 परिणाम – उत्पत्ति 3:9,16,17

वे परिक्षा में पड़े तथा पाप में गिर गए।
मनुष्य ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया। उत्पत्ति 2:17, 3:9,16,17

★ हव्वा की परिक्षा हुई उत्पत्ति 3:1–5
★ हव्वा ने आज्ञा उल्लंघन किया उत्पत्ति 3:6
★ परिणाम उत्पत्ति 3:7–24 हव्वा की प्रभावित करने की शक्ति
★ परमेश्वर से अलगाव शारीरिक मृत्यु

परमेश्वर ने आदम को वाटिका पर राज्य करने का अधिकार दिया तथा आज्ञा दी कि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से कभी न खाना। हव्वा के पास अपने पति को अच्छे और बुरे के लिए प्रभावित करने की सामर्थ थी।

पाप ने वाटिका में प्रवेश न सिर्फ तब किया जब हव्वा ने वह फल खाया परन्तु तब भी किया जब आदम ने जानते हुए फल लिया और खाया। हव्वा को धोखा दिया गया। आदम को नहीं परन्तु वह उस स्त्री से प्रेम करता था जिसे परमेश्वर ने उसके लिए बनाया था, इतना कि उसके साथ मर जाने तक।

उदाहरण : यीशु ने हमसे इतना प्रेम किया कि वह हमारे स्थान पर मर गया।

पाप का परिणाम :

i) मनुष्य परमेश्वर से दूर हो गया, परमेश्वर से अलग
  ★ वह परमेश्वर से छिप गया, उत्पत्ति 3:8,9 ; परमेश्वर से भय भीत 3:10
  ★ परमेश्वर के अस्तित्व से इनकार, रोमियों 1:20–22
  ★ परमेश्वर के साथ कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं
  ★ उत्पत्ति 4:14–16 रोमियों 6:23

ii) विवाह में पुरुष का स्त्री के साथ द्वन्द्व। 1 तीमुथियुस 2:14
  ★ वह पुरुष को पूर्ण नहीं करती, वह उसके साथ प्रतिस्पर्द्धा करती है, वे अब "एक" नहीं परन्तु विभाजित, किसी योग्य नहीं, आत्म केन्द्रित हो गए।

iii) मनुष्य अपने भाई को मारता है, ईर्ष्या करता है, जलन रखता है, लोभ करता तथा अपने भाई से घृणा करता है। आत्म केन्द्रित। उत्पत्ति 4 – कैन और हाबिल

iv) मनुष्य का कार्य, जीवन तनावपूर्ण हो गई है, खाली, बनावटी, अधूरी। उसका पर्यावरण नष्ट हो रहा है।

v) मनुष्य उस सृष्टिकर्ता का इनकार करता है जिसने उसे रचा तथा परमेश्वर ने उसे जो होने के लिए बनाया उसका त्याग कर वह बनने का प्रयास करता है जो वह नहीं है। रोमियों 1:21, 25।

ग. परमेश्वर मानवजाति के लिए अपने मूल उद्देश्य को पुनःस्थापित करता है।

i) परमेश्वर हमारे साथ संगति करने की इच्छा करता है, अब हम उसके परिवार के भाग बन सकते हैं, क्योंकि यीशु ने पाप का दण्ड चुका दिया। प्रकाशितवाक्य 3:20 ; यूहन्ना 1:12 ; 2 कुरिन्थियों 5:18 –21 ; फिलिप्पियों 2:6–11

ii) हम परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। हम परमेश्वर को व्यक्तिगत रुप में जान सकते हैं। हम उसके साथ प्रतिदिन चल सकते हैं। यूहन्ना 11:25,26 ; 3:17–18 ; 6:35
; 14:6 ; इब्रानियों 11:6 ; 1 यूहन्ना 5:11–13 ; 1 तीमुथियुस 2:5 ; एक परमेश्वर , एक मध्यस्थ – यीशु।

iii) विवाह का सम्बन्ध सही तरीके से पुनःस्थापित किया जा सकता है। इफिसियों 5:22–31 हम एक आत्मा, प्राण, देह हो सकते हैं।

iv) यीशु आया कि हम जीवन पाएं, यूहन्ना 10:10। हमारा काम, हमारा जीवन भी पूर्ण और आनन्दमय हो सकता है। दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध भी ऐसा हो सकता है जैसा परमेश्वर ने आरम्भ से चाहा था।कुलुस्सियों 3:17–23।

v) हम सब भी वो बन सकते हैं जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है, क्योंकि हम उसके स्वरुप में रचे गए हैं, हम उसके हाथ की कारीगरी हैं, इफिसियों 2:10। हम वो बन कर पूर्ण हो सकते हैं जो हमारा रचने वाला हमें बनाना चाहता है। रोमियों 12:2 ; 2 कुरिन्थियों 5:15,18,20 ।

''परमेश्वर का राज्य धार्मिकता, शान्ति और आनन्द है''

निपुण डिज़ाइनर

1. सही वस्त्र से सुसज्जित
सही सामग्री का चुनाव बताता है कि तैयार समान कैसा ''दिखेगा'', ''लगेगा'' तथा कैसे ठीक बैठेगा।

भजन संहिता	139
इफिसियों	1:4,5,6,11
	2:10
2 तीमुथियुस	1:9

2. निर्देश पुस्तिका के साथ नक़्शा, जैसे ... बाइबल

3. आवश्यक उपकरण – परमेश्वर द्वारा दिए गए
योग्यताएं, आत्मिक वरदान, प्रतिभाएं, स्वभाव, स्वभाविक वरदान

4. परमेश्वर सब कुछ देता है और कहता है कि अब वह बनो जिसके लिए मैंने तुम्हें रचा है।

5. परमेश्वर हमें ''स्वतन्त्रता'' देता है की हम इस बात का चुनाव करें कि हम उसका जो हमें दिया गया है क्या करें। रोमियों 6:16, यूहन्ना 10:10

अपने चुनाव की स्वतन्त्रता के द्वारा हम अपने सुख– शान्ति की कूंजी को थामे रखते हैं।

हिप्पोकृटेस – चिकित्सा – शास्त्र का पिता

उसने यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में चार मूल तरल पदार्थ हैं। यह निर्धारण करने वाले तत्व हैं जिससे ज्ञात होता है कि किस प्रकार व्यक्ति अपने व्यक्तित्व विशेषता में कार्य करता है।

1.	लहू	– (गरम), **प्रफुल्ल**	– अच्छा रंग और प्रसन्नचित
2.	काला पित्त	–(गीला), **उदास**	– चिन्ताग्रस्त, दु:खी
3.	पीला पित्त	– (सूखा), **गुस्सैल**	– असानी से क्रोधित हो जाना
4.	बलगम	– (ठंडा और गाढ़ा), **निरुत्साह**	– मन्द, आलसी

बाइबल पद

नीतिवचन

30:11 ''ऐसे भी हैं जो अपने पिता को शाप देते हैं और अपनी माता का धन्य नहीं कहते।''
उदास – अकृतज्ञ, आलोचनात्मक, दोष ढूंढने वाले

30:12 ''ऐसे भी हैं जो अपनी दृष्टि में तो पवित्र हैं, फिर भी अपनी गंदगी से धोए नहीं गए हैं।''
निरुत्साह – आत्म– सन्तुष्ट, अपने पाप नहीं देख सकता, आत्म – धार्मिकता, अच्छा जन।''

30:13 ''ऐसे भी हैं – वाह, उनकी आंखें घमण्ड से कैसे भरी रहती है। उनकी भौंहें, घमण्ड से कैसी चढ़ी रहती हैं।''
प्रफुल्ल – आत्म – उल्लासित, आत्मकेन्द्रित

30:14 ''ऐसे भी हैं जिनके दांत तलवार के समान और जबड़े खंजर के समान हैं कि सताए हुओं को पृथ्वी पर से और कंगालों को मनुष्यों में से फाड़ खाएं।''
गुस्सैल – तेज़ , ठट्ठा करने वाली जीभ

अधीनता – स्वीकरण

ढांचा जो विवाह को संभालता है

अधीनता – स्वीकरण **हृदय का भाव** है जहां पर हम दूसरे व्यक्ति की **आवश्यकताओं, इच्छाओं, अधिकारों और प्रतिष्ठा** को अपने से आगे रख देते हैं, ताकि मसीह को आदर मिले।

फिलिप्पियों 2:1–8
रोमियों 12:3,10,17
तीतुस 3:1,2
कुलुस्सियों 3:17, 18

अधीनता– स्वीकरण हमारे द्वारा किया गया चुनाव है
एक नियुक्त स्थान जैसे सेना में होता है। उदाहरण 1 कुरिन्थियों 11:3

अधीनता स्वीकरण का परिणाम :

व्यक्तिगत उन्नति तथा पूरा किया जाना

क.	मसीह में उन्नति	यूहन्ना 14:21
ख.	आनन्द	भजन संहिता 16:11, इफिसियों 5:18–21
ग.	शान्ति	गलातियों 5:22, फिलिप्पियों 4:6,7
घ.	सुन्दरता	1 पतरस 3:3,4
ङ.	बल	फिलिप्पियों 4:13
च.	परमेश्वर की सुरक्षा	भजन संहिता 91:1, 1 कुरिन्थियों 10:13
छ.	स्वतन्त्रता	2 कुरिन्थियों 3:7
ज.	प्रेम	गलातियों 5:22
झ.	आश्वासन	नीतिवचन 10:6

सहायक

वह जो अपने पति की वो बनने में सहायता करती है जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है, वह सब बन कर जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है।
एक सहायक :
जो आप में विश्वास करे
आप जैसे हैं वैसे ही आपको स्वीकार करे
आपको समझे
आप में दिलचस्पी ले
आपकी मददगार हो

अधीनता– स्वीकरण प्रेम कार्य में है, यह आपके पति को बताता है कि वह बहुत मुल्यवान है तथा उसकी आवश्यकताएं आपकी अपनी अवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

परिवार के लिए बनाना

नीतिवचन 24:3, 4
कुशलता और भक्तिपूर्ण ज्ञान घर (जीवन, घर-परिवार) बनता है, तथा समझदारी के द्वारा वह स्थापित (अच्छी और पक्की नींव) होता है, तथा ज्ञान के द्वारा उसके कक्ष (हर क्षेत्र के लिए) सारे मुल्यवान और मनभावक वस्तुओं से भरा रहेंगे।

''बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है '' ...

नीतिवचन 14:1 प्रत्येक **बुद्धिमान** स्त्री अपना घर बनाती है, परन्तु **मूर्ख** स्त्री उसे अपने हाथों से उजाड़ देती है।

''मूर्ख '' -- परमेश्वर की बातों के लिए सुस्त,नीरस, विनाश की ओर, नासमझ, बेवकूफ (खाली दिमाग)

नीतिवचन 18:6,7,21
21:23

नीतिवचन 12:15 ''**मूर्ख** की चाल अपनी दृष्टि में ठीक जान पड़ती है, परन्तु **बुद्धिमान** वही है, जो सम्मति पर ध्यान देता है।''

15:32 ''जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, वह अपने को तुच्छ जानता है, परन्तु जो घुड़की को सुनता है, वह समझ प्राप्त करता है।''

9:12,13 ''यदि तू बुद्धिमान हो, तो बुद्धि ही तेरा प्रतिफल होगी, और यदि तू उपहास करे, तो अकेला तू ही भोगेगा।''

31:10 ''भली पत्नी (स्त्री) कौन पा सकता है '' योग्य, समझदार, नेक। पर्याप्त शक्ति, योग्यता, बहादुरी, दिलेरी, दृढ़ता - शक्ति जिसके साथ संघर्ष किया जा सके - गम्भीर और चरित्रवान - इस्राएल के न्यायियों के समान वर्णन।

12:4 ''भली और योग्य पत्नी (स्त्री) जो गम्भीर तथा चरित्रवान है, अपने पति का मुकुट होती है (आनन्द का मुकुट), परन्तु जो लज्जा का कारण बनती है वह उसकी हड्डियों में सड़ाहट (कीड़े खाने के समान) के समान है।''

परमेश्वर का राज्य

मत्ती 6:33

पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता (धर्म और कार्य करने के उसके तरीके) की खोज (लक्ष्य बनाएं और प्रयास करें) में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।

रोमियों 14:17

क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना–पीना नहीं, परन्तु

1) **धार्मिकता** 2) **मेल** और 3)वह **आनन्द** है जो पवित्र आत्मा में है।

1. धार्मिकता ठीक सम्बन्ध

   i) परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध
   ii) स्वयं के साथ हमारे सम्बन्ध
   iii) अपने पड़ोसी (अन्य लोग) के साथ हमारे सम्बन्ध

ठीक सम्बन्धों के साथ आते हैं

2. मेल परमेश्वर के साथ, मेरे साथ, अन्यों के साथ
3. आनन्द परमेश्वर में, मुझ में, अन्यों में
4. पवित्र आत्मा में (केवल पवित्र आत्मा द्वारा सम्भव)

योग्य चाल चलना

फिलिप्पियों 1:27
केवल इतना करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के योग्य हो, जिस से चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं अथवा दूर रहूं, मैं तुम्हारे विषय में यही सुनूं कि तुम **एक आत्मा** में स्थिर हो तथा **एक मन** हो कर, **एक साथ मिलकर** सुसमाचार के विश्वास के लिए संघर्ष करते हो।

फिलिप्पियों 3:16,17
जिस स्तर तक हम पहुंच चुके हैं, उसी के (सत्य) अनुसार **आचरण** करें।

भाइयों, तुम सब मिल कर मेरा अनुकरण करो, और उन्हें ध्यान से देखो जो इस रीति से चलते हैं, जिसका नमूना तुम हम में देखते हो।

फिलिप्पियों 4:9
जो कुछ तुमने मुझ से सीखा, ग्रहण किया, सुना और मुझ में देखा है, उन्हीं का अनुकरण करो और परमेश्वर जो शान्ति (अविचलित, शान्त जनों का) का स्रोत है तुम्हारे साथ रहेगा।

इफिसियों 4:1,2,3
इसलिए मैं जो प्रभु का बन्धुआ हूं, तुम से निवेदन करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो (ऐसे आचरण के साथ जो परमेश्वर की सेवा की बुलाहट के लिए लाभदायक हो) उसके योग्य (ईश्वरीय) चाल (जीवन जीएं) चलो।

ऐसा जीवन जीएं जिसमें आप निम्न मनोदशा (सम्पूर्ण दीनता) और नम्रता (निःस्वार्थ, कोमलता, सौम्यता) तथा धीरज के साथ प्रेम से एक दूसरे के प्रति सहनशीलता प्रकट करो।

गम्भीरतापूर्वक यत्न और चौकस रहने के लिए संघर्ष करो कि मेल के बन्धन में हम सम्न्वय को बनाए रखें तथा आत्मा की एक बने रहें।

इफिसियों 5:8,15,17
पहिले तो तुम अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति के सन्तान के सदृश (ज्योति के जन्मगत लोगों जैसा जीवन जीएं) चलो ।

इसलिए सावधान रहो कि तुम कैसी चाल चलते हो – अर्थपूर्ण और योग्यरीति का तथा सही जीवन जीएं नासमझ और निर्बुद्धि मनुष्यों के सदृश नहीं वरन् बुद्धिमानों (समझदार, ज्ञानी) के सदृश चलो।

इस कारण अस्पष्ट और विचारहीन तथा निर्बुद्धि न हो, परन्तु यह दृढ़ता से यह समझ और जान लो कि प्रभु की क्या इच्छा है।

कुलुस्सियों 1:9–12
जिस से तुम्हारा चाल – चलन (आपका जीवन और आचरण) प्रभु के योग्य हो जाए ...

कुलुस्सियों 2:6
इसलिए जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु कर के ग्रहण कर लिया है ... चलते रहो (अपने जीवन को नियंत्रित और स्वयं का आचरण सही कर के) उसके साथ एक और उसके सदृश हो कर

कुलुस्सियों 3:3, 12–17
अतः परमेश्वर के उन चुने हुओं के सदृश ... धारण कर लो

कुलुस्सियों 3:18–24

पत्नियों ...
पतियों ...
बालकों ...
सेवकों ...

तीतुस 2:1–15, 3:1–8

पति - पत्नी सम्बन्ध
आरम्भ में

''आरम्भ में '' आदम और हव्वा के पास ''उद्देश्य'' तथा ''दिशा'' का पूर्ण ''एका'' था क्योंकि उनकी इच्छा सम्पूर्णतः परमेश्वर की इच्छा के अनुसार थी, इस कारण वे एक दूसरे के साथ पूरी ''सहमति'' में थे। वे एक ''मन'' के साथ ''आत्मा'' में एक थे, तथा ''एक साथ सुसमाचार (जो परमेश्वर की इच्छा है) के विश्वास के लिए प्रयत्न करते''।

कलीसिया के अगुवे होने के नाते हम पति पत्नियों के विवाह, दूसरों के सामने ''उदाहरण'' होने चाहिए जिससे हम अपनी कलीसिया में विवाह तथा परिवार का ''आदर्श ''बन सकें। ताकि हम कह सकें ''भाईयों और बहनों, 'हमारे उदाहरण' का अनुसरण करो''। अतः हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए उस नक्शे या नमूने का अनुसरण करना चाहिए जो उसका वचन है।

शैतान ने पुरुष और स्त्री में इस ''एका'' की शक्ति को देखा - एक दूसरे और परमेश्वर के साथ पूरी सहमति में - उसने योजना बनाई कि उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध तथा परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध खड़ा कर दें।

शैतान की योजना हव्वा को पहले अपनी इच्छापूर्ति के लिए कायल करना तथा उसे आदम और परमेश्वर से स्वतन्त्र करने की था।

जब पाप ने प्रवेश किया हम परमेश्वर केन्द्रित होने की बजाय ''आत्म केन्द्रित'' बन गए तथा इस कारण से अन्य केन्द्रित हैं।

अब परमेश्वर के उद्देश्य ''सुसमाचार के विश्वास के लिए प्रयत्न'' नहीं करते थे।

एक दूसरे की सेवा तथा पूर्ति करने से अधिक महत्वपूर्ण अपनी सेवा और अपनी पूर्ति हो गई।

जब पाप ने प्रवेश किया पुरुष व स्त्री अपने पर केन्द्रित हो गए।

उत्पत्ति 3:7,8 पाप के कारण आदम और हव्वा ने पहिले एक दूसरे से अपने आप को छिपाया। दूसरा वे परमेश्वर से छिप गए।
वे चकरा गए और समझ न सके कि कौन उनका शत्रु था।

उत्पत्ति 3:12, 13 उन्होंने अपना पाप स्वीकार नहीं किया और न ही पश्चताप किया परन्तु इसके बजाय, उन्होंने क्या किया और क्यों किया उसको सही ठहराने और दोष लगाने लगे।

हमें अपने पापों को एक दूसरे और परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए तथा उसके लिए क्षमा मांगनी चाहिए।

परन्तु अब यीशु के कारण हम वापस ''एक आत्मा, एक मन'' की ओर लौट सकते हैं तथा सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ प्रयत्न कर सकते हैं।

यीशु ने मनुष्य को परमेश्वर के लिए छुड़ा लिया तथा परमेश्वर के साथ आरंभिक सम्बन्ध को पुनःस्थापित कर दिया और आरम्भ में पाप से पहले के समान एक दूसरे के साथ एक होने की क्षमता को पुनःस्थापित कर दिया।

अब हम विवाह और सम्बन्धों के लिए परमेश्वर की मूल योजना की ओर लौट सकते हैं और हम पवित्र आत्मा के साथ परमेश्वर के वचन पर आधारित सिद्धान्तों का निर्माण कर सकते है जिससे हमारे मन नए किए जाएं और हम सामर्थी हो जाएं ताकि हम एक बार फिर,

आत्म केन्द्रित के बजाय अन्य केन्द्रित
स्वतन्त्र होने के बजाय अन्योन्याश्रित हो जाएं

यदि हम कहें कि हम यीशु मसीह के हैं तथा उससे उत्पन्न हुए हैं और परमेश्वर के साथ इस आत्मिक सम्बन्ध को रखते हैं। तो सर्वप्रथम वह एक दूसरे के साथ हमारे सम्बन्धों में दिखाई देनी चाहिए।

पतियों का प्रथम सांसारिक सेवा कार्य अपनी पत्नी और बच्चों के लिए है फिर अन्यों के लिए।

उत्पत्ति 18:19 इब्राहीम ने अपने बच्चों और घराने को आज्ञा दी कि वे ''यहोवा के मार्ग पर स्थिर बने रहें।''

अय्यूब 1:1 अय्यूब निर्दोष, खरा, परमेश्वर का भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला था।
अय्यूब 1:5 अय्यूब उन्हें पवित्र करता, (उनके लिए प्रार्थना और मध्यस्थता करता) बड़े तड़के उठ कर उनके लिए होमबलि चढ़ाता था।

पत्नी का सांसारिक सेवा कार्य सर्वप्रथम अपने पति और फिर अपने बच्चों तथा फिर अन्यों के लिए है।

नीतिवचन 31:11,12,27
उसके पति का मन पूर्णतः उस पर भरोसा करता है तथा दृढ़ता से उसमें विश्वास करता और आश्रित रहता है, जिससे उसे ईमानदारी से लाभ की घटी नहीं होती या बेईमानी के लाभ की आवश्यकता नहीं होती। वह उसे दिलासा देती, प्रोत्साहन देती और अपने जीवन के सारे दिनों में उसके लिए अच्छा करती है।

वह अपनी गृहस्थी के सब मामलों का ध्यान रखती और बिना परिश्रम (गप्पें, असन्तोष, आत्मदया) की रोटी नहीं खाती।

पालन पोषण करना

नीतिवचन 22:6

''बच्चे को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसे चलना है; और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।''

शिक्षण और सिखाने के बीच में भिन्नता है।
हम में से बहुत से लोग अपने बच्चों को वह मार्ग सिखा रहे हैं जिस में उन्हें चलना चाहिए, परन्तु ''उन्हें उस मार्ग की शिक्षा जिसमें उन्हें चलना है'' देने की अवहेलना कर रहे हैं। बच्चे को शिक्षा दी जा सकती है कि वह अपने माता पिता का उत्तर भरोसे और आज्ञाकारिता में दे।

शिक्षा देना : ''चरित्र को ढालना, अभ्यास द्वारा सिखाना, व्यायाम, आदेशों के प्रति आज्ञाकारी रहें, एक निर्धारित दिशा की ओर केन्द्रित करना, प्रतियोगिता के लिए तैयार करना। जीवन की प्रतियोगिता।

हम सब अपने बच्चों को किसी न किसी प्रकार से शिक्षा देते हैं, चाहे जानते हुए या अनजाने में।

शमूएल को बोले गए वचन को सुनने और आज्ञा मानने की शिक्षा दी गई :

एली के पुत्र अनाज्ञाकारी और लुच्चे थे। एली ने उन्हें सिखाया परन्तु उसने उन्हें परमेश्वर के मार्ग में चलने की शिक्षा नहीं दी। ''उन्होंने अपने पिता की बातों पर ध्यान नहीं दिया''। ''क्योंकि उसके पुत्रों नें अपने को भ्रष्ट बना लिया था और वह उनकों रोकता नहीं था''। उसने ''अपने पुत्रों को परमेश्वर से बढ़कर आदर दिया।''1 शमूएल 2:29

कैसे शिक्षा दें ???

नीतिवचन 22:15 — ''बच्चे के हृदय में तो मूढ़ता की गांठ लगी रहती है ; अनुशासन की छड़ी उसे खोलकर दूर कर देती है।''

नीतिवचन13:24 — ''जो अपने पुत्र को छड़ी से नहीं मारता, वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम करता है, वह यत्न से उसे अनुशासित करता है।''

नीतिवचन 23:13, 14 — ''बच्चे को ताड़ना देने से न रुकना। यदि तू उसे छड़ी से पीटे तो वह मर नहीं जाएगा। तू उसे छड़ी से पीटकर उसका प्राण अधोलोक से बचा लेगा।''

नीतिवचन 29:15 — ''छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो बच्चा अपनी मनमानी करता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।''

नीतिवचन 19:18 — ''जब तक आशा है अपने पुत्र की ताड़ना कर, और उसकी मृत्यु की कामना न कर।''

नीतिवचन 29:17 ''तू अपने पुत्र की ताड़ना कर, और उससे तुझे सुख मिलेगा। वह तेरे प्राण को भी आनन्दित करेगा।''

परमेश्वर का वचन जो कहता है क्या मैं उसकी प्रतीति करता हूं ? या फिर हमारा समाज बेहतर जानता है ?

इब्रानियों 12:6,7 ''क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है उसे कोड़े भी लगाता है। यदि ताड़ना सह लो, तो परमेश्वर तुम्हारे साथ पुत्रों के समान व्यवहार करेगा।''

नीतिवचन 20:30 ''कोड़ों के घाव से बुराई दूर होती है, और ताड़ना से अन्तःकरण शुद्ध होता है।''

विलापगीत 3:27 ''मनुष्य के लिए यह भला है कि वह अपनी जवानी में जुआ उठाए।''

''छड़ी'' को कभी भी क्रोध, अप्रसन्नता या अस्वीकृति के साथ नहीं जोड़ना चाहिए क्योंकि माता पिता अपने बच्चे की ताड़ना परमेश्वर की आज्ञाकारिता में धीरज प्रेमी आत्मा के साथ करते हैं। यदि हम लगातार बच्चे को तंग और डांटते रहते हैं तो बच्चे की ओर बैर बन जाता है क्योंकि उसकी गलती पर उसे सही नहीं किया गया।

बच्चा सीखेगा कि छड़ी उसके लिए हमारे अपार प्रेम के साथ जुड़ी है जो उनकी भलाई के लिए है।

ठीक उसी प्रकार जैसे परमेश्वर हम बड़ों के लिए करता है। भजन संहिता 119:65,71,75

सूसन वैसली ने कहा ''मै ऊंची आवाज़ करने वाली को मारती हूं जब तक वह चुप न हो जाए और चुपचाप रहने वाले को भी मारती हूं जब तक वह न चिलाये।'' 17 बच्चों की माता तथा प्रचारक की पत्नी।

छड़ी का असंगत प्रयोग ''शिक्षा''में नहीं है।

हमें इस बात में सुसंगत होना आवश्यक है कि क्यों कैसे और कब हमे अनुशासित करना है। हमें पहले अपने अनुशासन के सन्दर्भ में अपने व्यवहार में सुसंगत होना है। हमें भी अनुशासित होना है। (यह सबसे कठिन भाग है।)

हमें उनकी सुरक्षा के लिए उनकी सीमाओं का बाड़ा बनाना है न कि अपनी सुविधाओं के लिए।

वे परमेश्वर के वचन तथा आप के द्वारा बनाई गई उन सीमाओं में स्वतन्त्रता और सुरक्षा का स्थान ढूंढ लेंगे।

अधीनता

वह ढांचा जो विवाह को सम्भालता है

अधीनता : हृदय का रवैया है जहां हम दूसरे व्यक्ति की आवश्यक्ताओं, इच्छाओं, अधिकारों, और सम्मान को अपने से आगे रखने के लिए इच्छुक होते हैं, ताकि मसीह का आदर कर सकें।

फिलिप्पियों 2:1–8
रोमियों 12:3, 10, 17, 18
तीतुस 3:1,2
कुलुस्सियों 3:17, 18

अधीनता एक चुनाव है जो हम करते हैं
एक नियुक्त स्थान जैसा सेना में होता है। उदाहरण 1 कुरिन्थियों 11:3

अधीनता का परिणाम :

व्यक्तिगत पूर्ति और उन्नति

क.	मसीह में उन्नति	यूहन्ना 14:21
ख.	आनन्द	भजन संहिता 16:11 ; इफिसियों 5:18 – 21
ग.	शान्ति	गलातियों 5:22 ; फिलिप्पियों 4:6,7
घ.	सुन्दरता	1 पतरस 3:3,
ङ.	सामर्थ	फिलिप्पियों 4:13
च.	परमेश्वर की सुरक्षा	भजन संहिता 91: 1, 1 कुरिन्थियों 10:13
छ.	स्वतन्त्रता	2 कुरिन्थियों 3:7
ज.	प्रेम	गलातियों 5:22
झ.	सुरक्षा	नीतिवचन 10:8,9

सहायता करने वाली, सहायक :
वह जो अपने पति की वो बनने में सहायता करती है जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है, वह सब बन कर जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है।
एक सहायक :
जो आप में विश्वास करे
आप जैसे हैं वैसे ही आपको स्वीकार करे
आपको समझे
आप में दिलचस्पी ले
आपकी मददगार हो

अधीनता– स्वीकरण प्रेम कार्य में है, यह आपके पति को बताता है कि वह बहुत मुल्यवान है तथा उसकी आवश्यकताएं आपकी अपनी से अधिक महत्वपूर्ण है।

ईश्वरीय क्रम

''प्रत्येक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।'' 1 कुरिन्थियों 11:3

मसीह, जो परमेश्वर है तथा पिता के समान है, पिता के अधीन है। मनुष्य अपने ऊपर अधिकारियों के अधीनता में है : परमेश्वर , और अन्य (सरकार, पुलिस, मालिक) हालांकि सब मनुष्य बराबर हैं।

पत्नी अपने पति की अधीनता में है, हलांकि वह उसके बराबर है। बच्चे अपने माता पिता की अधीनता में हैं, हलांकि वह उनसे निम्न नहीं हैं। परमेश्वर अधिकार के क्रम का इस्तेमाल करता है ताकि हमें सुरक्षा दे सके और अधिकतम प्रसन्नता हमें प्रदान कर सके।

अधीनता :
यह पत्नी की जिम्मेवारी है। इफिसियों 5:22,23
उसे(पत्नी को) पवित्र शास्त्र के द्वारा यह आज्ञा दी गई है कि वह अपने आप को अधीन बनाए।
1 पतरस 3:1-6; 1 कुरिन्थियों 11:3,8,9 ; 1 तीमुथियुस 2:11-12 ; तीतुस 2:2-4 ; कुलुस्सियों 3:17,18,23 ।

जब आप इच्छा से, प्रेम पूर्वक अपने पति की अधीनता स्वीकार करेंगी, तो आपकी कोमलता और प्रेम आपके पति को प्रेरित करेंगी कि वह आपसे कोमलता से व्यवहार करेगा, अपने हृदय में बनाए रखेगा और आपकी रक्षा करेगा।

यह एक नियुक्त स्थिति है – यह आप पर ज़बरदस्ती नहीं है कि आप इसे लें परन्तु आपके द्वारा किया गया चुनाव है – जैसे मसीह को प्रभु बनाना।

पवित्र शास्त्र यह बताता है कि पत्नी की अधीनता निरन्तर (लगातार होने वाली) जीवन शैली है। युनानी क्रिया वर्त्तमान काल में है।

अधीनता ज़रुरी है, वैकल्पिक नहीं है, युनानी क्रिया आदेशात्मक है, एक आज्ञा ।
आपकी अधीनता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आपका पति आपसे किस प्रकार का व्यवहार करता है और न ही उसकी योग्यताओं, गुणों, ज्ञान, विद्या, या आत्मिक स्थिति पर।

अधीनता आत्मिक विषय है, यह ''ऐसा होना चाहिए जैसा प्रभु के लिए।'' अतः पति की अधीनता को अस्वीकार करना स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह है।

पति की अधीनता परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम की परिक्षा है। कुलुस्सियों 3:17

अधीनता का अर्थ है कि पत्नी अपनी सारी योग्यताओं, गुणों, साधनों, उर्जा को पति के अधिकार में डाल देती है। पत्नी अपनी सारी योग्यताओं का इस्तेमाल अपने पति के प्रबन्ध में अपने पति और परिवार के लिए करती है। वह अपने पति के साथ एक ही लक्ष्य प्राप्त करने का यत्न करते हैं।

सहायक

सहायक :

उस में विश्वास रखे / जैसा वह है वैसे ही उसे ग्रहण करे / उसको समझे / उसमें दिलचस्पी ले ।

सहायक : ताले की चाबी है, कैमरे की फिल्म है ।

पत्नी होने के नाते : परमेश्वर का आपके लिए उद्देश्य तथा योजना यह है कि आप अपने पति की सेवा सर्वप्रथम करें । 1 कुरिन्थियों 11:9 यीशु हमारा आदर्श है । फिलिप्पियों 2:1–7

वह तरीके जिससे पत्नी अपने पति की "**सहायता**" कर सकती है, नीतिवचन 31:11,12

1. घर को सुरक्षित स्थान बनाएं, प्रोत्साहन, समझने और सुख चैन का स्थान, शरण का स्थान ।
2. विश्वासयोग्य तथा भरोसेमन्द रहें । नीतिवचन 31:11,12
3. अच्छा रवैया बनाए रखें । फिलिप्पियों 4:5–8
4. प्रेम, ईमानदारी और खुले दिल से बात चीत करें । नीतिवचन 12:14
5. अपने पद, सम्पत्ति और अपने कार्य से सन्तुष्ट रहें । फिलिप्पियों 4:11,13
6. धीरजवान, क्षमाशील, सहनशील बनें । इफिसियों 4:2,3,31,32
7. उसकी (पति) समस्याओं, चिन्ताओं, नौकरी, शौक में रुची लें ।
8. परिश्रमी, कमख़र्चीली, कर्मिष्ठ बनें । नीतिवचन 31:12,22,19,24
9. प्रेमपूर्वक अपने विचार, सलाह तथा सुधारक उपाय दें । नीतिवचन 31:26
10. अपने को आकर्षक बनाए रखे तथा अन्दरुनी सन्दरता को बनाए रखें । नीतिवचन 31:30
11. स्वस्थ आत्मिक जीवन को बनाए रखें ।
12. बच्चों की परवरिश में अपने पति का सहयोग करें ।नीतिवचन 31:28
13. बच्चों व अन्यों के भीतर अपने पति के प्रति निष्ठा बनाएं । पत्नी का अपने पति के प्रति व्यवहार को बच्चे चुपचाप पकड़ लेते हैं ।
14. धन्यवादी रहें । नीतिवचन 31:20,27
15. उसके (पति) निर्णयों में भरोसा दिखाएं । नीतिवचन 31:23,25

यह सब आपके पति को यह सन्देश देते हैं कि वह बहुत मल्यवान है तथा उसकी अवश्यकताएं आपकी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण है ।

सहायक

	बुद्धिमान	मूर्ख
1.	सहारा देती है	विरोध करती है
2.	पूर्ण करती है	प्रतियोगिता करती है
3.	अनुकूल बन जाती है	अपने आप की सेवा करती है
4.	बचाती है	पोल खोल देती है
5.	पालन करने वाली	सताने वाली

अधीनता देना है :
अधीनता के सम्बन्ध में मेरा प्रशन है '' तुम्हारी इच्छाएं, आवश्यकताएं क्या है, तथा मैं तुम्हारी किस प्रकार से सेवा कर सकता हूं?''

जब पत्नी के जीवन का केन्द्र पति होगा, तो शायद ही कभी वह बाहर किसी दूसरी स्त्री की तरफ देखेगा। बहुत ही कम पुरुष के लैंगिकता का प्राथमिक कारण कामवासना होता है। वह उस स्त्री को चाहता है # 1 जो उसे जैसा वह है ग्रहण करे, # 2 जो उसको सराहे # 3 जिसे उसकी ज़रुरता हो, तथा # 4 जो उसे अपने जीवन में प्रथम स्थान दे।

पत्नी के जीवन में उसका प्रथम सेवा कार्य क्षेत्र उसका पति है।

1. परमेशवर ने स्त्री को पुरुष का सहायक बनाया है : पुरुष बिना स्त्री के अधूरा है। उत्पत्ति 2:18
2. परमेश्वर ने स्त्री को योग्य सहायक बनाया है : इफिसियों 5:22 ; 1 पतरस 3:1
3. स्त्री की सृष्टि की गई कि वह पुरुष के समानुरुप हो जाए : वह उसकी पूरक है, जिस प्रकार ताले की चाबी या कैमरे की फिल्म – बहुत ही आवश्यक।
4. पत्नी को बनाया गया कि वह अपने पति की आवश्यकताओं, कमी – घटी को पूरा करे ''अपने जीवन के सारे दिनों में उसके प्रति बुरा नहीं पर भला ही व्यवहार करती है।'' नीतिवचन 31:12 ।

स्त्री को कुछ भी ऐसा नहीं करना चाहिए जो उसके पति के लिए या पति के प्रति उसकी सेवा के लिए हानिकारक हो।

पति की सात मूल आवश्यकताएं / ईटें जो विवाह सम्बन्ध बनाती हैं

1. पति को ऐसी पत्नी चाहिए जो उसका मर्द के रुप में आदर करे।
2. उसे ऐसी पत्नी चाहिए जो उसे मुखिया के रुप में स्वीकार करे।
3. ऐसी पत्नी जो उसके प्रति इस बात के लिए धन्यवादी हो, जो कुछ उसने किया या कर रहा है।
4. ऐसी पत्नी जिसके चरित्र और भले कार्य की प्रशंसा दूसरे लोगों के द्वारा की जाए।
5. ऐसी पत्नी जों निरन्तर अपने अन्दरुनी और बाहरी सन्दरता को विकसित करे।
6. ऐसी पत्नी जो उसे प्रेमपूर्वक आकर्षित करे।
7. ऐसी पत्नी जो उसे परमेश्वर के साथ एकान्त का उचित समय दे।

उत्तम : आशिष उन्नति बांटना स्पर्श

बेहतरीन विवाह सम्बन्ध का नुस्ख़ा :

आशिष (युलोगिया) – यु "भला" लोगोस "शब्द" नीतिवचन 18:20,21

1. अपने जीवन साथी को आशिष देने का प्रथम तरीका यह है कि आप उसके विषय में भला बोलें तथा अच्छे शब्दों से उत्तर दें। इफिसियों 4:29 ; नीतिवचन 16:24

   नीतिवचन 31:26 की स्त्री प्रशंसा प्राप्त करती है क्योंकि वह बुद्धिमानी से मुंह खोलती है तथा कोमल शिक्षा उसकी जीभ पर रहती है।

   आपके पास उन शब्दो के द्वारा जो आप बोलते हैं, अपने विवाह सम्बन्ध को आशिष देने की सामर्थ है। यह सीख कर भी कि कब हमें चुप चाप रहना है आप आशिषित हो सकते हैं। नीतिवचन 13:3

2. आप प्रायोगिक लाभ उसके ऊपर डाल कर उसे आशिषित कर सकते हैं, जैसे भले कार्य
3. आप आभार और धन्यवादी के शब्दो को बोलकर व्यक्त करने के द्वारा उसे आशिष दे सकते हैं।
4. आप प्रार्थना में परमेश्वर की कृपा बुलाने के द्वारा उसे आशिष दे सकते हैं। लूका 16:27, 28, 35

भले वचन भले कार्य आभार व्यक्त प्रार्थना

उन्नति- निर्माण करना

अपने पति के व्यक्तित्व के हर पहलु को बनाएं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका साहस बांधें, उसकी अपनी क्षमता की पहचान बढ़ाएं।

उन्नति का परिणाम यह होगा कि उसके प्रेम की और अपने को देने की क्षमता बढ़ जाएगी।

उन्नति व्यक्तिगत प्रोत्साहन, अन्दरुनी शक्तिकरण तथा लोगों के बीच शान्ति और समन्वय को बनाने के लिए है।

''इसलिए हम उन बातों में संलग्न रहें जिनसे मेल – मिलाप होता है तथा एक दूसरे के जीवन का निर्माण (उन्नति और विकास) होता है।'' रोमियों 14:19

''हम में से प्रत्येक इसे प्रयोग में लाएं कि अपने पड़ोसी को उसके अच्छे के लिए तथा उसकी वास्तविक भलाई के लिए प्रसन्न करे कि उसकी उन्नति हो, जो उसे सामर्थ दे और आत्मिक बनाए । रोमियों 15:2

पति अपनी पत्नी की उन्नति उसकी प्रशंसा करने के द्वारा करता है
पत्नी अपने पति की उन्नति अपने प्रेममय प्रतिक्रिया के द्वारा करती है।

उन्नति करना बनाती है कभी गिराती नहीं

फिलिप्पियों 4:8 — अपने साथी (पति) में आपको जो बातें मनभावनी लगती है, और उसके हर प्रशंसनीय गुणों पर विचार करें।

होने दें कि आपके शब्द इस वचन के द्वारा संचालित हो।

मैं अपने जीवन साथी से क्या बोल सकती हूं जो उन्नति दे, बनाए, प्रात्साहित करे, बल दे तथा शान्ति लाए।

पति और पत्नी दोनो के लिए शब्दों , ध्यान केन्द्रिण तथा आंखो से सम्पर्क के द्वारा प्रोत्साहित करना बेहद ज़रुरी है।

उन्नति के लिए युनानी शब्द – ओइकोडोमियो (oikodomeo) है – ओइकोस् (oikos) ''परिवार, घर, गृह तथा डेमो (demo) ''निर्माण करना या बनाना'' है। जब आप एक दूसरे को उन्नत करते और बनाते हैं, तब आप मिलकर अपने घर का निर्माण करते हैं।

बांटना

बांटना – आपके समय, कार्यकलाप, रुची, और चिन्ता, विचार, भीतरी विचार, आत्मिक चाल, परिवार, उद्देश्य और लक्ष्य आपके जीवन के हर पहलु को छूए।

बांटा हुआ समय, बांटा हुआ कार्यकलाप, बांटी हुई रुची, बांटे हुए अनुभव ले जाते हैं बांटी हुई भावनाओं और बांटे हुए भरोसे की ओर।

जब आप अपनी भावनाओं को बांटें तो सही समय और परिस्थिति की प्रतिक्षा करें। अपनी भावनाओं को जितना तार्किक हो बना कर प्रस्तुत करें।

''शब्द चित्रित भावनाओं '' का प्रयोग करें
भावनात्मक शब्दों का सम्बन्ध मनुष्य की रुची और पुराने अनुभवों से है :

- ✎ मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एक घंटे का टेप हूं और तुमने मुझे अपने प्यार में ऐसे चला दिया जैसे मैं दस मिनट की टेप हूं।
- ✎ मुझे ऐसा लगता है जैसे पूरे दिन ट्रक धोने के बाद मैं तौलिया हूं।
- ✎ मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं दो घंटे रखा गया समोसा हूं, जैसे ठंडा।
- ✎ मुझे ऐसा लगता है जैसे बड़ी मछली पकड़ने के बाद मैं कीड़ा हूं।
- ✎ मुझे ऐसा लगता है मैं एक दिवसीय क्रिकेट खेलने के बाद की बाल हूं, बेकार और त्यागी।

बातचीत एक योग्यता है :
1. कि उसे ऐसे बांटें कि दूसरा व्यक्ति समझ सके और कही गई बात को ग्रहण कर सके।
2. सुनना ताकि आप व्यक्त की गई बात की भावना और अर्थ दोनो अपने विचार प्रकट कर सको।

हम बात चीत करते हैं
शब्दों के द्वारा – 7 %   लहजे से – 38 %   देह की भाषा से – 55 %

स्पर्श

स्पर्श हमें बताता है कि हमारा ध्यान रखा जाता है, हमारे भय को शान्त करता है, दर्द को आराम देता है, दिलासा देता है, हमें सन्तुष्टी की भावनात्मक सुरक्षा देता है।

हल्के से स्पर्श के द्वारा स्नेह बांटने से हमारी बहुत सी भावनात्मक ज़रुरतों की पूर्ति हो जाती है जो यौन क्रिया नहीं दे सकती। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विशेषज्ञों का मानना है कि इस समाज में यौन के साथ हमारी इतनी तल्लीनता वास्तव में गरमजोशी के लिए हमारी गहरी , अतृप्त ज़रुरत की अभिव्यक्ति है, बिना लैंगिकता के स्पर्श का आश्वासन और घनिष्ठता है।

उन्नति के नौ तरीके
डा॰ एड. व्हीट द्वारा ''प्रेमी जीवन''

1. अटल निर्णय लें कि फिर कभी भी अपने साथी की किसी बात, विचार या कार्य की आलोचना नहीं करेंगे। निर्णय जिसका कार्य के द्वारा समर्थन हो।

2. अपने साथी को पढ़ें – उन क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील बनें जहां आपका साथी कमज़ोर है तथा उन तरीकों पर विचार करें जिनसे उसे बनाया जा सके।

3. प्रति दिन उन सकारात्मक गुणों और आचरण पर विचार करें जिसे आप पसन्द करते हैं तथा अपने साथी में उन बातों को सराहें।

4. लगातार प्रशंसा और आभार शब्दों में व्यक्त करें। अकृत्रिम बनें, स्पष्ट बनें, उदार बनें, आप ''बोले गए'' वचन के साथ उन्नति करेंगे।

5. उसके काम के लिए अपना आदर व्यक्त करें।

6. अपने पति को यह प्रकट करें कि व आपके जीवन में कितना महत्वपूर्ण व्यक्ति है – सदा उसके विचारों को लें, उसके निर्णयों का सम्मान करें।

7. चेहरे और शरीर से प्रतिक्रिया दें।

8. हमेशा एक दूसरे के साथ बड़े शिष्टाचार से पेश आएं।

9. पति अपनी पत्नी के साथ निजी और सार्वजनिक स्नेह दिखाएं।

1 पतरस 3:9 – 12 रोमियों 12:14–21

छः भीतरी सुन्दरता के गुण

1. साहस :

भीतरी प्रतिबद्धता जो बिना आशा त्यागे सुयोग्य लक्ष्य का पीछा करे।

जब स्त्री की बेहतर विवाह सम्बन्ध की उम्मीद क्षीण हो जाए, अपने पति के लिए उसका आर्कषण फीका पड़ जाए सम्बन्ध का जीवन क्रमशः विलोप होने लगे।

अपनी हिम्मत (साहस) बढ़ाने का पहला कदम यह है कि पूर्ण सम्बन्ध का सक्रिय रुप से पीछा करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

दूसरा कदम कष्ट को सह लेना है। अपने आप को कष्ट सहने के लिए समर्पित करें ।

2. दृढ़ता :

जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लें पीछा करें।

3. कृतज्ञता :

दूसरों से प्राप्त भलाईयों के लिए सच्चा आभार मानना।

जैसा वह है और जो वह है इस बात के कृतज्ञा रहें।

अपेक्षा रखना आपके विवाह सम्बन्धों में घातक है।

4. शान्ति :

वह भीतरी शान्ति जो तनाव की स्थिति में बिना भय के चुपचाप प्रतिक्रिया करने दे।

अपनी प्रवृति को आपे से बाहर न जाने दें, उसे नियन्त्रित करें। यह "नम्र और मेल की आत्मा है"।

5. कोमलता :

अन्य की भावनाओं के लिए नरमी से विचार करना।

किसी वस्तु का हम जितना अधिक मुल्य समझेंगे, उसके साथ हम उतनी ही नरमी के साथ बरताव करेंगे।

6. निस्वार्थ प्रेम :

अन्य व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए क्रियाशील कदम।

तीन प्रकार का प्रेम :

i. स्नेह – यह इस पर आधारित रहता है जब कोई हमारी आवश्यकताओं को पूरी करता है या हमारी उम्मीदों पर ख़रा उतरता है।

ii. वासना – यह हमारी यौन पूर्ति की आवश्यकता पर केन्द्रित रहती है।

iii. सच्चा प्रेम – दूसरों की आवश्यकताओं को ढूंढता है तथा उन आवश्यकताओं को पूरा करने के अवसरों को ख़ोजता है।

➲ सच्चा प्रेम कहता है "मैं तुम्हारी ज़रुरतों को देखता हूं, कृपया मुझे उन्हें पूरा करने का मौका दें

अन्य व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए क्रियाशील कदम।

विवाह सम्बन्ध के योग्य गुण

1. अनुकूलनता तथा लचीलापन

बदल कर अनुकूल हो जाने की क्षमता।

उदाहरण : दो नदियां जो एक साथ बह रहीं हैं वह पहिले तो तेज़, उग्र, एक दूसरे पर दहाड़ती हुई आती हैं, परन्तु एक दूसरे के साथ मिल जाने के बाद वह पहिले से अधिक विस्तृत, गहरी और अधिक प्रबल हो जाती है।

2. समानुभूति :

अन्य लोगों की आवश्यकताओं, कष्टों तथा इच्छाओं के प्रति संवेदनशील रहने की क्षमता। उनके साथ महसूस करना, उनके दृष्टिकोण से उनकी दुनिया का अनुभव करना।

3. कठिनाईयों में भी कार्य करने की क्षमता।

उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को ग्रहण तथा सही रीति से अलग और नियन्त्रित करना तथा उनकी समस्याओं को स्पष्ट और परिभाषित करना और साथ – साथ काम करना।

4. प्रेम प्राप्त करने और देने की क्षमता

शब्दिक, प्रगट रुप से और शारीरिक रीति से देना तथा जैसे दिया जाता है वैसे ही प्रेम ग्रहण करना।

5. भावनात्मक स्थिरता

सुसंगत, विश्वसनीय भावनात्मक प्रतिक्रिया।

6. दम्पत्ति के बीच समानताएं

उनके शौक, पसन्द, नापसन्द, मित्र, शैक्षिक स्तर, धर्म और संस्कृति

7. संचारण (बात चीत)

अपनी बात को इस प्रकार बांटने की क्षमता कि दूसरा व्यक्ति से कही गई बात को वह समझ और ग्रहण कर सके।

सुनना ताकि व्यक्त किए गए का भाव और अर्थ समझ कर विचार कर सकें।

ऐसे दम्पत्तियों का जिनका विवाह सम्बन्ध सुखद रहा है अपनी ध्यान–उर्जा अपने "सम्बन्धों " में लगाते हैं। जो कम प्रसन्न हैं वे अपना ध्यान अपनी विवाह सम्बन्धों की परिस्थितियों पर, जैसे घर, बच्चे, या समाजिक जीवन जैसे वैवाहिक सुखों के स्रोतों पर लगाते हैं।

बात करने के मूल नियम

1. बात चीत के कदम :

शिक्षा देने योग्य बनें	नीतिवचन 13:18, 18:2, 25:12
संवेदनशील / सहानुभूति वाला बनें	नीतिवचन 12:25, 25:20 ; रोमियों 12:15 ; 1 पतरस 3
सकारात्मक बनें	नीतिवचन 18:8, 20:19, 31:11, याकूब 4:11
उपलब्ध रहें	
दिलचस्पी लेने वाला बनें	नीतिवचन 15:14, 18:15

सुनना सीखें याकूब 1:19

ग्रहण करने वाला बनें, दूसरों में वास्तविक रुची लेने वाला बनें, अच्छे प्रशन पूछें, मूक संकेतों पर ध्यान दें, एकाग्र करें, रोक –टोक न करें।

बोलना सीखें नीतिवचन 15:28 ; 16:13, 21–24

नरमी से बोलें	नीतिवचन 9:13 ; 15:1,4 ; 25:15
सोच विचार कर बोलें	नीतिवचन 10:19 ; 11:12 ; 12:23 ; 17:27
चुप रहने का मुल्य जानें	नीतिवचन 13:3 ; 18:13
प्रेमपूर्वक बात करें	रोमियों 13:8,19 ; इफिसियों 4:29
ईमानदार रहें	इफिसियों 4:15
परमेश्वर के समय के प्रति संवेदनशील रहें	
लड़ाई झगड़े से बचना सीखें	भजन संहिता 141:3 ; नीतिवचन 14:29 ; 17:14 ; नीतिवचन 18:1; 20:3

2. अच्छी बात – चीत की रुकावटें :

मूर्खता
घमण्ड
मेरी राय
भरोसे को तोड़ना
उतावलापन
क्रोध

प्रसंग : नीतिवचन 12:15, 16:18, 18:2, 25:9, 29:20, 14:7,29, 15:18, 22:24,25, 29:22, 16:32, 19:11
सभोपदेशक 7:9, कुलुस्सियों 3:8, याकूब 1:19, 20

3. हमारी बातें हमारे बारे में क्या प्रकट करती हैं? मत्ती 12:34 –36

परमेश्वर क्या चाहता है कि हम बोलें ?
हमारी बात – चीत में हमारी इच्छा कैसे सम्मिलित है ?

ईंटें जो विवाह सम्बन्ध को बनाती हैं

1 पतरस 3:1–6

आचरण 1 पतरस 3:1,2 1 तीमुथियुस 2:9,10

पति आपके आचरण को ध्यान से देखता है
आपके आचरण पर सूक्ष्म दृष्टि, उसमें अन्तर्लीन, अपना सारा ध्यान आपके आचरण पर।
मनोहर जीवन (पत्नी) का मूक प्रचार, याकूब 2:14, 3:13,14

1. पत्नी को चाहिए कि वह अपने पति के साथ आदर से व्यवहार करे तथा उसका सम्मान करे, आपके आचरण से उसको यह संदेश मिलना चाहिए, ''मैं तुम्हें पति का सम्मान देती हूं।'' (सम्मान)

क) आपको उसकी सुरक्षा चाहिए – शारीरिक, मानसिक, भावात्मक , आत्मिक। आपका आचरण आत्म–निभरता का नहीं होना चाहिए। स्वतन्त्रता विवाह सम्बन्ध को नष्ट कर देगी। (सम्मान का कारण) न्यायाधीश के सामने लाया जाना।

ख) मूल–भूत सामग्री की आवश्यकता के लिए आपको उसकी ओर देखना पड़ेगा।
(निर्भर) (कदर करते हुए)

ग) कभी भी दूसरे किसी व्यक्ति के प्रति अधिक आदर या निष्ठा न दिखाएं। पास्टर, शिक्षक, आत्मिक अगुवे, सम्बन्धी या मित्र।
(आदर) (बहुत पसन्द)

घ) बिना बहस किए या उसकी आत्मा को रोके उसे अन्तिम निर्णय लेने दें।
(समर्पित)

ङ) शारीरिक तौर से उसे त्यागना उसके पुरुषत्व के लिए घातक है।
(गहरा प्रेम)

च) उसे असफल होने का अवसर दें, आप अपना सहयोग और प्रोत्साहन देते रहें।
(आनन्द लें)

2. आप पत्नी होने के नाते उसे अपने अगुवे के रुप में स्वीकार करें तथा उस पर विश्वास करें।
(प्रशंसा करें) भजन संहिता 15

क) प्रशंसा करें जब वह :
धार्मिकता की चाल चलता है, निर्दोष है
धार्मिकता के कार्य करे, न्याय करे
अपने हृदय में सत्य सोचे और कहे (ईमानदारी)
झूठ और व्यर्थ की बातें न कहे
भक्त लोगों का आदर करे, बुरे लोगों से घृणा
प्रतिज्ञा को हर हाल में रखे
लोगों से फायदा न उठाए
उसे रिश्वत न दी जा सके
अपने आपको दुख पहुंचाने के लिए न बदले

लोग उनकी ओर आकर्षित होते हैं जो उनकी प्रशंसा करते हैं तथा उनसे घृणा करते हैं जो उसका अनादर करें या तुच्छ जानें।

ख) आपकी प्रशंसा के द्वारा उसकी नेतृत्व की क्षमता को सुदृढ़ करेगी, बोलें तथा सुस्पष्ट रहें।

ग) उसे सावधानी से सुनें, उसकी ओर ध्यान दें जब वह आपसे या किसी और से बात कर रहे हों, जब आप उसको सुनेंगे तब आपकी प्रशंसा आपके मुख से प्रतिबिम्बित होगी। यह प्रतिबिम्बित करें कि आपके पास उसके लिए क्या "ईनाम" है।

<u>अपने पति की प्रशंसा व्यक्त करने के तरीके</u>

i. अपने पति की सलाह और राय लेना आरम्भ करें

ii. अपने पति की पुराने निवेदनों और इच्छाओं को स्मरण करने का प्रयत्न करें तथा जब सम्भव हो उसको पूरा करना आरम्भ कर दें।

iii. जब आप अपने बच्चों, परिवार या अन्य लोगों के साथ होते हैं तो अवसर ढूंढें ताकि आप अपने पति के सकारात्मक गुणों का परिचय करा सकें। उसके नकारात्मक गुणों को नहीं।

iv. अपने पति के व्यवसाय, रुची के लिए प्रशंसा प्राप्त करने का प्रयत्न करें, यह समझने का प्रयत्न करें कि वह अपने कार्य को कितना महत्वपूर्ण समझता है।

✐ पुरुष के स्वाभिमान को इस से अधिक कुछ नष्ट नहीं करता जब वह सुनता है कि उसकी पत्नी के सहयोग ने उसके प्रयत्न को घटा दिया है।

v. आपके पति जो बोलें उस पर बिना नकारात्मक प्रतिक्रिया के ध्यान से सुनें – खुले मन से सुने।

vi. कोई भी ऐसा दिन न गुज़रने दें जिसमें आपने अपने पति की कम से कम एक बात की प्रशंसा न की हो, जो उसने पिछले 24 घंटे में कही या की हो।

vii. अपनी संवेदनशीलता का प्रयोग करके अपने पति के व्यक्तिगत लक्ष्य का पता लगाएं तथा उसे अपना सहयोग दें जब व उनका पीछा करता है।

viii. मूक संकेतों के द्वारा अपने पति की प्रशंसा आरम्भ कर दें। जब वह घर आए तो उसकी चिन्ता के विषय, उसकी पसन्द का भोजन, उसे ध्यान से सुनना, अपनी आंखे उस पर लगाएं। जब वह आप से बात करे तो बच्चों टी.वी. या बर्त्तनों आदि में अपना ध्यान न बांटें।

ix. जब आप उसके विरुद्ध कुछ गलती कर दें तो अपने पति से सच्चे मन से क्षमा मांग लें। स्वीकार कर लें "मैं गलत थी" क्या आप मुझे माफ़ करेंगे?

3. आपको ऐसी पत्नी बनना चाहिए जिसकी अन्य लोग प्रशंसा करें।

1 तीमुथियुस 2:9,10 "... जैसा कि उन स्त्रियों को शोभा देता है जो परमेश्वर का भय रखती हैं तथा अपने आप को परमेश्वर की भक्तिन कहती हैं।

i. दूसरों के द्वारा आपके अच्छे कार्यो और चरित्र की प्रशंसा की जाए। नीतिवचन 31:31
पत्नी अपने पति को प्रतिबिम्बित करती है। 1 कुरिन्थियों 11:7 ... स्त्री तो पुरुष की महिमा है।

क) आत्मिक अगुवों द्वारा प्रशंसा :
- उनकी आवश्यकताएं जानने के लिए
- ज्ञान और समझबूझ के लिए
- अपने पति और बच्चों के प्रति प्रेम के लिए
- पति के प्रति समर्पित तथा उसकी आज्ञाकारी रहने के लिए
- आपकी उच्च नैतिकता के लिए
- आपके गृह प्रबन्ध के लिए

ख) आपके बच्चे आपकी प्रशंसा करें
- दूसरों पर आपके भक्तिपूर्ण जीवन के प्रभाव के लिए
- पति के साथ आपके समन्वय के लिए
- आपके परिश्रम, कमखर्ची तथा अच्छे गृह प्रबन्ध के लिए
- आपकी समझदारी और दयालुता के लिए

ग) आपके पड़ोसी आपकी प्रशंसा करें
- निंधन और ज़रुरतमन्दों के प्रति आपकी उदारता के लिए
- आपके अतिथ्य सत्कार के लिए
- दुःखी की सहायता करने के लिए

घ) कलीसिया आपकी प्रशंसा करे
- सन्तों की व्यावहारिक देख भाल के लिए
- विवाह प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए
- जवान स्त्रियों को सिखा सकने की क्षमता के लिए

नीतिवचन 12:4
योग्य और चरित्रवान स्त्री – चरित्र में गम्भीर और दृढ़ – अपने पति के लिए आनन्द का मुकुट है, परन्तु वह जो उसे लज्जित करती है वह हड्डियों में सड़ाहट के समान है।

ईंटें जो विवाह सम्बन्ध को बनाती हैं

1. दिखाई देना : भीतरी मनोवृत्ति शारीरिक सुन्दरता का निर्माण करते हैं।
आपके कपड़े और बाल आपके पति की पसन्द, स्तर और व्यवस्था का प्रतीक है।
घर की दिखावट उसके ज्ञान, प्रबन्ध और सुरक्षा का प्रतीक है। उसका घर उसके ख़जानो का घर है।

पत्नी की आत्मा घर का वातावरण बनाती है। घर आना स्वर्ग या नरक हो सकता है।

2. दृष्टिकोण 1पतरस 3:4

क) नम्र और शान्त आत्मा
कोई संघर्ष या कलह नहीं
नम्र – अविनाशी, मिटायी नहीं जा सकती, उपेक्षा या नष्ट नहीं की जा सकती,
चरित्रबल , सशक्त आत्म संयम, शान्त सुशिष्ट और मान– मर्यादा, शान्त और नियन्त्रण में, दूसरो को परेशान न करे।

नम्र – परमेश्वर के लिए आशा तथा आस को उत्पन्न करना।
शान्त आत्मा – भय और चिन्ताओं पर विजय प्राप्त करना, घबराहट या चिड़चिड़ाट से मुक्त।

ख) आभारी आत्मा
समस्त सम्भावनाएं परमेश्वर को दे दें भजन 62:5
किसी चीज़ की आशा न करें – अपने पति के प्रेम की किसी भी और हर एक बात के लिए आभारी रहें।
भक्ति के साथ सन्तोष सीखें 1 तीमुथियुस 6:6–11

3. जवाब उत्तर देना ना कि प्रतिक्रिया करना नीतिवचन 25:15

सारा ने इब्राहिम की आज्ञा मानी "आज्ञा मानना" किसी को ध्यान देना
दूसरे की आवश्यकताओं का ध्यान रखने का उद्देश्य, एक सकारात्मक, सहायतापूर्ण उत्तर।

क) परमेश्वर को अच्छे लगने के नियम (आपके पति के विषय में)
परमेश्वर के साथ सही खड़े रहें
सही उद्देश्य रखें
सही रवैया (क्षमा, पाप नहीं)
ईमानदार रहें , परमेश्वर के साथ ठीक
त्याग करने के लिए इच्छुक रहें

ख) पति को अच्छे लगने के लिए इन्हीं नियमों का प्रयोग करें

ग) भक्तिन स्त्रियों से गहरी बातें सीखें, एस्तेर – बुद्धिमानी से अच्छी लगी
रुत – निष्ठावान, सारा – आज्ञाकारी आत्मा

रणभूमि

रिश्तेदार
बच्चे
धन व्यवस्था
यौन सम्बन्ध

रणभूमि वह स्थान है जहां दो शत्रु एक साथ आते हैं ताकि अपने मतभेदों को मिटा सकें।

माता पिता और रिश्तेदार, विवाह सम्बन्ध ''में '' या हमारे विवाह सम्बन्ध की दहलीज़ पर नहीं होने चाहिए। विवाह सम्बन्ध में केवल दो ही खिलाड़ी होते हैं बाकि सब दर्शक हैं।
यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने माता पिता को विवाह सम्बन्ध में अपनी ओर ले आऊं : मेरा उनसे नाता है, मै उनकी हूं।
उम्र और फासला कोई महत्व नहीं रखता, माता पिता फिर भी विवाह सम्बन्ध के आंगन में आ सकते हैं। सास ससुर की समस्या वास्तव में माता पिता /बच्चों की समस्या है।
वह तरीके जिसके द्वारा माता पिता विवाह सम्बन्ध में ठहर जाते हैं : धन, भेंट, व्यापार, धर्म, जीवन स्तर,परम्परा, छुट्टियां, पोते पोतियां या नाति नातिन, बिमारी।
यदि आपके पति को आपके माता पिता के साथ प्रतिस्पर्द्धा करनी है, तो वह हारेगा। यदि पति को ऐसा नहीं लगता कि वह अपनी पत्नी के साथ ''प्रथम स्थान'' पर है तो वह हर एक उस बात से नाराज़ होगा जिसके कारण वह ''प्रथम स्थान'' से बाहर हुआ है। ''दो एक बने रहेंगे '' जो कुछ भी आप दोनो के बीच आएगा वह आपके पति को ''प्रथम स्थान'' से बाहर फेंक देगा।

बच्चे, पति के साथ पत्नी का समय, ध्यान, निष्ठा, स्नेह और बिना शर्त प्रेम को अपने स्थान से हटा देगा। बच्चे जानते हैं कि कब और कैसे बांटना और विजय प्राप्त करना है। अपने पति को पहिले रखना बच्चों को प्रदर्शित कराता है कि पति, पिता ही परिवार का मुखिया है। यह उनमें सुरक्षा की भावना लाएगा।

दम्पत्ति में अकसर बच्चों को अनुशासित करने के विषय मतभेद रहता है। हम (दम्पत्ति) एक दूसरे की कमज़ोरी की क्षतिपूर्ति करते है। जब संदेह हो, अपने पति के मार्गदर्शन का अनुसरण करें।

धन व्यवस्था, वह तरीका हो सकता है जिससे आपके पति को यह ''लगे ''कि वह अधिकार में है। उसको यह लगना चाहिए कि वह परिवार का दाता है तथा हमें पत्नी होने के नाते इसे छीनना नहीं चाहिए। यदि वह इस धन व्यवस्था को ठीक से नहीं सम्भाल पा रहा है तो इस क्षेत्र में उसकी सहायक होना सही है। अधिकतर धन की समस्याएं बजट बनाने के द्वारा निपटायी जा सकती है। फिर ''बजट'' यह बताएगा कि पैसा कब और कहां खर्चना है। स्त्री को परिवार सम्बन्धित धन व्यवस्था का पूरा ज्ञान होना चाहिए। कैसे, कब, कहां, कौन इत्यादि।

यौन सम्बन्ध

यौन क्रिया पुरुष के स्वाभिमान और उसके पुरुषत्व को बनाती है, जब वह अपने आपको कमज़ोर, असुरक्षित, असहाय, या निराश पाता है। उसे आपका सहयोग चाहिए न कि आपका शरीर ! उसे जानना चाहिए कि आप उसके शरीर का आनन्द लेती हैं। 1 कुरिन्थियों 7:11 ।।

साधारणतया पुरुष छू कर, तस्वीर से, या देखने से एकदम सहवास के लिए तैयार हो जाता है।
यौन क्रिया का पुरुष के लिए क्या अर्थ है :
यदि पुरुष बिस्तर पर अच्छा सम्बन्ध दिखाता है तो वह कहीं भी अच्छा सम्बन्ध दिखला सकता है।
पुरुष जो यौन क्रिया में सन्तुष्ट रहता है वह दूसरे क्षेत्रों में भी अपने अन्दर आत्मविश्वास विकसित करता है।
पुरुष जीवन की किसी भी असफलता को सह लेता है यदि वह बिस्तर में सफल रहता है।
यदि वह यौन क्रिया में असफल रहता है तो वह कहीं भी सफल महसूस नहीं करेगा।
विपत्ति के समय पुरुष प्रेम क्रिया करना चाहेगा ताकि अपनी पत्नी से शक्ति प्राप्त कर सके।

राजा दाऊद ने अपने पुत्र की बिमारी के दौरान उपवास किया और प्रार्थना की परन्तु जब वह मर गया तो दाऊद उठा और स्नान कर के भोजन किया और अपनी पत्नी के पास सान्त्वना, बल, पुनरारंभ, और पुरुष के समान आत्म विश्वास बनाने के लिए गया।

पुरुष की ज़रुरतें हैं जिसे किसी को पूरी करनी चाहिए। सहवास उसकी थकान और तनाव को दूर कर देता है। यह पुरुष में पुनःजोश डाल देता है। यह उसे महसूस करता है कि पुरुष के रुप में पूरा और सम्पूर्ण है।

स्त्री को मानसिक रुप से तैयार होने के लिए समय चाहिए। उसे समय की खोज के लिए सोचना चाहिए। स्त्री को यौन क्रिया के दौरान तैयार और एकाग्र होना चाहिए। उसे अपने दिमाग और विचारों को नियन्त्रित करना चाहिए नहीं तो वह अपने को इस्तेमाल और दुर्व्यवहार की गई समझेगी। वह अपने पति से नाराज़ होगी और वह नहीं जान पाएगा कि क्यों।

स्त्री चाहेगी कि उससे प्रेम किया जाए परन्तु वह जानती है कि यदि वह अपने पति को छूती है तो वह उसके साथ यौन क्रिया करना चाहेगा। काली बिल्ली का उदाहरण

मेरे पास चोगा "हां "है और चोगा "नहीं "है। "नहीं " चोगा मेरा अपना रेशमी है।

स्त्री साधारणतया सोते समय बात – चीत करना चाहती है।

प्रेम क्रिया करने की कूंजी : रवैया
प्रेम क्रिया के लिए मेरी प्रतिक्रिया उसकी जिम्मेवारी नहीं है, मेरी है।
यदि वह जानना चाहता है तो उसे बता दें कि आप को क्या पसन्द है क्या नहीं। वह आपका मन नहीं पढ़ सकता।

1 पतरस 3:1–6

3:1 इसी प्रकार, हे विवाहित स्त्रियों, अपने अपने पति के अधीन रहो (अपने आपको उनके सहायक और उन पर निर्भर करते हुए उनके अधीनस्थ कर दें , तथा अपने आपको उनके अनुकूल बना लें), जिससे यदि उनमें से कुछ वचन (परमेश्वर का) का पालन न करते हों, तो वे बातों के द्वारा नहीं वरन् अपनी अपनी पत्नियों के (भक्तिपूर्ण) जीवन से जीतें जाएं,

2 जब वे तुम्हारे पवित्र और सम्माननीय चाल-चलन को ध्यानपूर्वक देखते हैं, साथ ही आपके आदर (पति के लिए ; उसके लिए आपको लगना चाहिए कि आदर में सम्मिलित है : उसका सम्मान करना और उसे स्वीकार करना – मान करना, महत्व देना, आभार मानना, पुरस्कार मानना तथा दूसरे शब्दों में कहें तो उसे बहुत पसन्द करना, जो अपने पति की मन में और बोल कर प्रशंसा करना, उसमें लीन रहना, उससे गहरा प्रेम करना तथा उसका आनन्द लेना है) ।

3 तुम्हारा श्रंगार केवल (मात्र) दिखावटी न हो, जैसे बालों का गूंथना, सोने के आभूषणों से सुसज्जि होना, या विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहिनना ;

4 वरन् यह होने दें कि हृदय में छिपे व्यक्ति की आंतरिक सुन्दरता और सजावट जो नम्र और शान्त मन वाले अविनाशी आभूषणों के साथ सुसज्जित हो, इसका (उत्सुक या उत्तेजित नहीं, परन्तु) परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा मूल्य है ।

5 क्योंकि पूर्वकाल में स्त्रियां भी जो परमेश्वर में आशा रखती थीं अपने अपने पति के अधीन रहकर (अपने आपको उनके सहायक और उन पर निर्भर करते हुए उनके अनुकूल बन जाती) अपने को इसी रीति से सजाती – संवारती थी ।

6 इसी प्रकार सारा, इब्राहिम की आज्ञा मान कर (उसके निर्देशों का पालन करके और उसके प्रभुत्व को अपने ऊपर स्वीकार करने के द्वारा) उसे स्वामी (मालिक, अगुवा, अधिपति) कहकर बुलाती थी । यदि तुम भी बिना भयभीत हुए (उन्मत्त भय और चिन्ताओं से परेशान न होते हुए) वही करो जो उचित है तो उसकी बेटियां ठहरोगी ।